

१५५

(राग: खमाज - ताल: जलद त्रिताल)

देखो धीट हटक मरोरी मोरी बैयां। मटक छटक आन परत मोरी  
पैयां। ऐसो ठिठोरी करत जमुनाके पनघटतट ॥ध्रु. ॥ अधर मधुर  
बन्सीधर सुंदर लटक चाल अलबेली चलत दैयाँ। छैल छबेली  
छबे ब्रिज बन हरलेत मनोहर अनुज बलैयाँ ॥१॥